OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

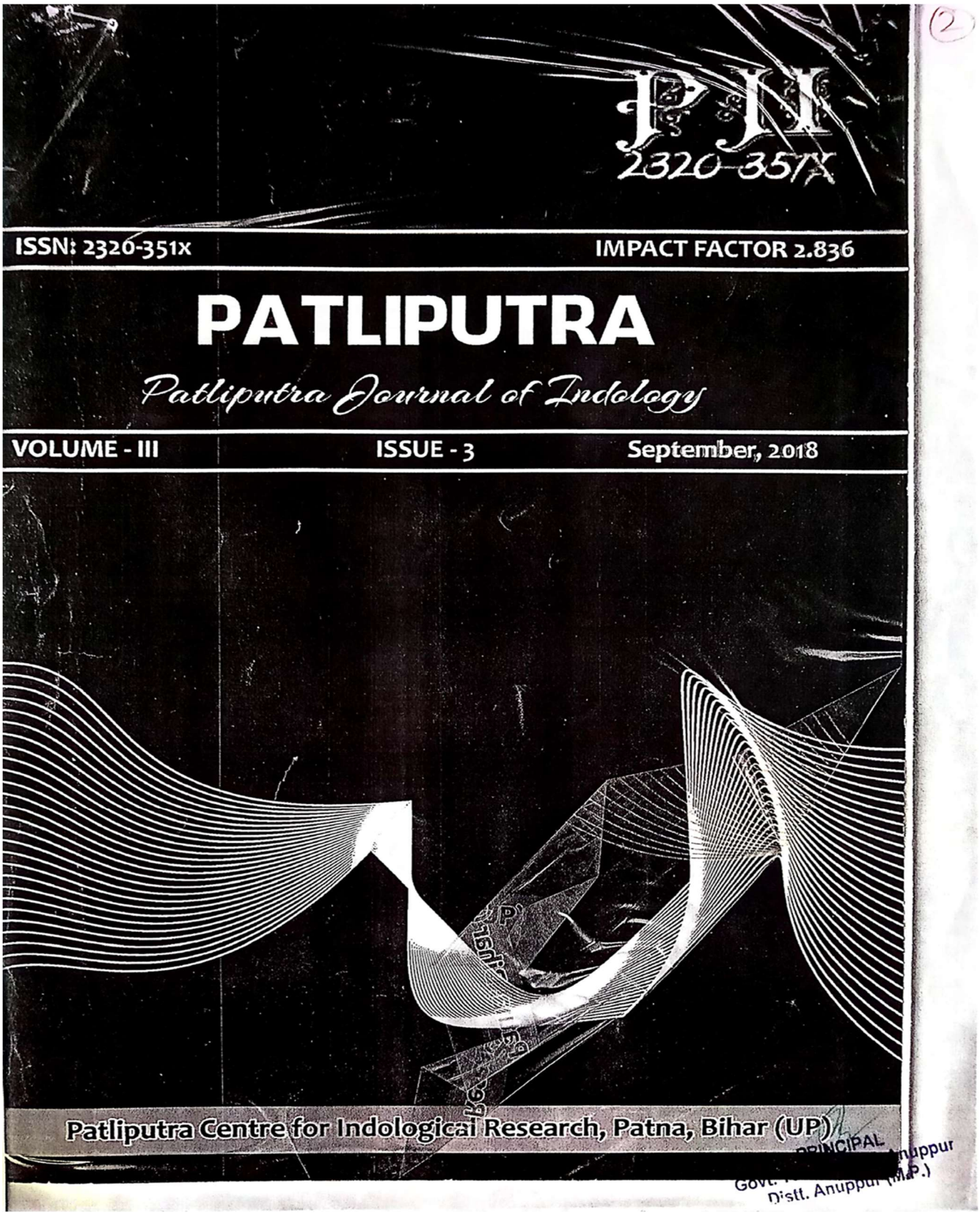

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR

Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)

Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

Study of family problems of child labor in Anuppur district

2018

PJI Patliputra Journal of Indology 2320-351X

Patliputra Journal of Indology ISSN: 2320-351x

अनूपपुर जिले में बाल श्रमिकों की पारिवारिक समस्याओं का अध्ययन

तरन्नुम सरवत

सहा.प्राध्यापक (समाजशास्त्र) जनभागीदारी, शा. महाविद्यालय अनूपपुर (म.प्र.)

सारांश :–

मानव जगत में उत्साह, उमंगों एवं सपनों का सर्वोकृष्ट जीवित पुंज बालक को माना जाता है। बच्चे किसी भी राष्ट्र के भविष्य का प्रतिनिधित्व करते है। देश के भावी कर्णधार एवं प्रगति का आईना है। ये राष्ट्र के धरोहर होते है जिनकी समुचित देखभाल एवं विकास पर ही किसी भी राष्ट्री की प्रगति निर्भर करती है वे सभ्यता एवं भविष्य के आधार है और निरंतर पुर्नजीवन का स्त्रोत भी इन्हीं के कंधो पर मानवता के उज्जवल भविष्य की आधारशिला रखी जा सकती है किन्तु विडम्बना इस बात की है कि इन बच्चों कि एक बड़ी संख्या ऐसे बच्चों कि है जिनका जीवन संघर्षो एवं असमान्य परिस्थिति में बीतता है।

किसी भी देश के बालकों की अच्छी अथवा बुरी दशा वहॉ के सांस्कृतिक स्तर का सबसे विश्वसनीय मापदण्ड होता है। आदिकाल से बच्चों का पालन–पोषण विशेष और महत्वपूर्ण सामाजिक उत्तरदायित्व रहा है इस संदर्भ में उसकी आवश्यकताओं की संतुष्टि में परिवार की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है मनुष्य के जीवन में बाल्यावस्था एक ऐसी स्थिति है जिसमें उनको सबसे अधिक सहायता देखभाल प्रेम, सहानुभूति और सुरक्षा की आवश्यकता होती है जिन व्यक्तियों का बाल जीवन सुखी, संतुष्टि और सुरक्षित गुजरता है उनका व्यक्तित्व और भविष्य भी समान्यतः संतुलित होता है और वे एक विकासशील, सशक्त और उन्नत समाज की संरचना में रचनात्मक सहयोग देते है।

प्रस्तावना :–

प्राचीन काल से ही बालश्रमिक कृषि, उद्योग, व्यापार तथा घरेलू धंधों में कार्यरत है। परंतु उस समय जनसंख्या के कम दबाव गरीबी, अज्ञानता, रूढ़िवादिता, तथा भाग्यवादिता के कारण उनकी शिक्षा एवं उनके सर्वागीण विकास की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया बचपन ही मजबूरी की बेदी पर होम कर दिया जाता है और फिर उनके हाथों में कलम और किताब के स्थान हंसिया, फावड़ा और श्रम के निशान ही सदैव दिखाई पड़ते है। बालश्रम को बढ़ावा देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उन उद्योगपतियों कारखानेदारो और सम्पन्न किसानों की है जो बच्चों को काम धन्धों पर लगाना चाहते है क्योंकि एक तो ये छोटे बच्चे आधी या कम मजदूरी में ही काम कर लेते है और दूसरे गंदे और असुविधाजनक वातावरण में चुपचाप घंटो काम करते है।

बालश्रम भारत की अन्य समस्याओं म एक कठिन समस्या है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है। कि भारत का एक भविष्य जो किसी कस्बे व नगर महानगर की किन्हीं बस्तियों में जन्म लेकर जीवन के 6 से 8 वर्ष की दहलीज को पार करते ही अपने पेट की चिन्ता में वह सुबह शाम के पेट भरने की समस्या से बाध्य होकर उन बच्चों को चाय की दुकानों, हाथकरघों और फुटपातों पर काम करते देखा जा सकता है। बच्चों को रोजगार ढूढ़ने के जो भी कारण हो प्रायः बालक ऐसी स्थितियों में काम करते है जो उनके स्वास्थ कल्याण व विकास के लिए हानिकारक है, जिससे अधिकतर बाल श्रमिक कभी स्कूल नहीं गये होते है या उन्हें पढ़ाई बीच में छोड़कर रोजगार में लग जाना पड़ता है। कामकाजी बालक शिक्षा प्रशिक्षण और कौशल प्राप्त करने से वंचित रह जाते है। जबकि यह अजीविका पोषण तथा आर्थिक विकास के लिए पूर्व उपेक्षित है चूंकि बालश्रम एक व्यापक समस्या है इसलिये यह आम जनता मजदूर संघो समाज सेवा संगठनों सरकार के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न बन गये है।

अनूपपुर जिले में बाल श्रमिकों की स्थिति :–

अनूपपुर जिले में बाल श्रमिकों की मजदूरी के दरे भी बहुत ही कम है। इन श्रमिकों को सामान्य श्रमिकों की उपेक्षा बहुत ही कम मजदूरी मिलती है। इनके काम करने के घण्टों तथा छुट्टी के सम्बन्ध में कोई निश्चित स्थिति नहीं है जिले के बाल श्रमिकों से मालिकों द्वारा अनेक अनुचित, अमानवीय, अनैतिक कार्य कराये जाते है। जिनसे उनका चरित्र व स्वभाव तो गिरता ही है साथ–साथ समाज में अवांछनीय तत्वों की भी वृद्धि होती है। जिले के लगभग सभी उद्योगों में बाल श्रमिकों को अत्यन्त दयनीय दशाओं के अन्तर्गत काम करना पड़ता है। जिससे वे शीघ्र ही रोग ग्रस्त हो जाते है और चिकित्सा के समुचित अभाव में अपने को सदैव के लिये खो बैठते है। जिले के बाल श्रमिकों को वयस्क श्रमिकों के साथ काम करना पड़ता है। जिससे उनकी अनेक बुरी आदते बाल श्रमिक भी सीख जाते है। जैसे–बीड़ी, सिगरेट पीना, जुआँ खेलना, सिनेमा इत्यादि।

अनूपपुर जिले के बाल श्रमिकों का जीवन स्तर अत्यन्त ही निम्न कोटि का है। आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक इत्यादि सभी दृष्टियों से बाल श्रमिक अत्यन्त ही पिछड़ा हुआ है। उसे पूरा शरीर ढ़कने के लिए वस्त्र भी नहीं मिलते है और रहने के लिये उसे टूटी–फूटी झोपड़ी ही उपलब्ध होती है, अधूरा भोजन अधूरा वस्त्र एवं अधूरा आवास अनूपपुर जिले के बाल का आर्थिक जीवन है। आय से व्यय अधिक होने के कारण वे हमेशा ऋणग्रस्त रहता है। जिले के बाल श्रमिकों को मनोरंजन का कोई समय या अवसर नहीं दिया जाता है। अतः उन्हें नारकीय जीवन जीने के लिये विवश होना पड़ता है। जिले के बाल श्रमिक प्रायः असंगठित क्षेत्र में काम करते है अतः उनका कोई श्रम संगठन भी नहीं है। अभी हाल ही के अध्ययन में अनूपपुर जिले में बाल श्रमिकों की संख्या निम्न है :–

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

Jaithari Road Anuppur, District- Anuppur, Madhya Pradesh, Pin Code:- 484224 www.gtcanuppur.ac.in

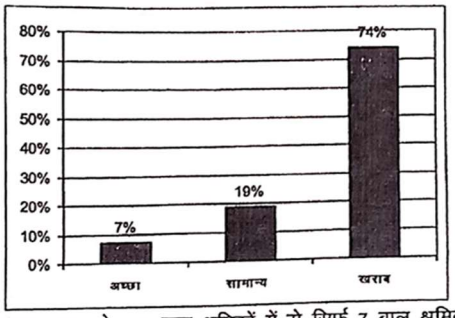

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि अनूपपुर नगर के 100 बाल श्रमिकों में से सिर्फ 7 बाल श्रमिकों का ही स्वास्थ्य अच्छा है जबकि 19 बाल श्रमिकों का स्वास्थ्य समान्य है। दो तिहाई श्रमिक अर्थात 74 प्रतिशत बाल श्रमिकों का स्वास्थ्य खराब पाया गया है। अतः निम्न सारणी से ज्ञात होता है कि अनूपपुर नगर के बाल श्रमिकों के स्वास्थ्य की स्थिति अत्यन्त निम्न है क्योंकि अधिकतर बाल श्रमिक किसी न किसी छोटी–मोटी बिमारी के शिकार है।

निष्कर्ष–

देश को बाल श्रमिकों के नियोजन के कलंक से मुक्ति दिलाने के लिए अभी तक किये गये प्रयासों और उनसे मिले परिणामों के अनुभवों के आधार पर यह निष्कष निकाला जा सकता है कि इस महत्वपूर्ण अभियान के समक्ष अनेक चुनौतिया या समस्याएँ है। जिनके निराकरण की योजना बनाने के लिए पहले इन चुनौतियों और समस्याओं के विलय में महानता से अध्ययन कर लेना चाहिए और बाद में उनके समाधान हेतु कोई व्यवहारिक या सैद्धान्तिक नियमों का निर्माण करना चाहिए। बाल श्रम उन्मूलन की दिशा में अभी तक के अनुभवों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल श्रमिकों के सम्बन्ध में सरकारी संगठनों स्वेच्छिक संस्थाओं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों अथवा अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों आदि द्वारा प्रकाशित आकड़ों में बहुत कुछ भिन्नता देखने को मिलती है। इनमें ज्यादातर आंकड़े तो पूर्वाग्रहों से ग्रसित भी बताये जाते हैं। अतः इस समस्या के निराकरण की योजना बनाने से पूर्व आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में बिल्कुल स्पष्ट आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं। इस कार्य के लिए सरकार को कुछ प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय स्वयं सेवी संस्थाओं की सहायता लेनी चाहिए। बाल श्रमिकों की ठीक–ठीक संख्या उनकी आयु, पारिवारिक स्थिति, शैक्षणिक स्तर, स्वास्थ्य कार्य करने की स्थिति, वेतन एवं पारिश्रमिक दरे आदि की स्पष्ट सूचनाएँ संकलित की जानी अपरिहार्य है तथा उनकें पुनर्वास अथवा कल्याण की योजनाओं का निर्माण और उनको मूर्त रूप प्रदान किया जाना सम्भव हो सकेगा।

सुझाव :–

सुझाव किसी भी शोध अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग होता है शोधार्थी अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर शोध कार्य के उपरान्त जो तथ्य प्रकट करता है वही सझाव है बाल श्रमिक को शोध अध्ययनों के परिप्रेक्ष्य में सुधारात्म सुझावों का विशेष नहत्व होता है क्योंकि इन्हीं सुझावों के आधार पर शोध समस्या से सम्बन्धित व्यक्तियों को मार्गदर्शन मिलता है। अतः शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के आधार पर बाल श्रमिकों कल्याण सम्बन्धि कुछ सुझाव दिये हैं :–

1.गरीबी को समाप्त करना
2.शिक्षा उपलब्ध कराता
3.निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना
4.बाल श्रमिकों के कार्य की दशाओं में सुधार
5.बाल श्रम कानूनों का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन
6.व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध कराना
7.जीवन स्तर को ऊँचा उठाना

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सक्सेना, एस.सी. (1992) : श्रम समस्यायें एवं सामाजिक सुरक्षा, रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ।
2. यूनीसेफ – दुनिया के बच्चों की स्थिति (1996) यूनीसेफ के लिए आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित।
3. सिंह आभा (1998) – यूनाइटेड नेशंस एण्ड द राइट ऑफ ए चाइल्ड लेबर इन इण्डिया : नई दिल्ली : जे.एन.यू.।
4. वासु, के. एण्ड वेन, पी.एच. (1998) : द इकोनॉमिक्स ऑफ चाइल्ड लेवर अमेरिकन इकोनॉमिक्स रीव्यू, नं. 3:412–27
5. राय रंजन (2008) : एनालिसिस ऑफ चाइल्ड लेबर इन पेरू एण्ड पाकिस्तान : ए कम्परेटिव स्टडी : जर्नल ऑफ पापुलेशन इकोनॉमिक्स नं. 13 : 3–19
6. खन्ना के.पी. (2001)– इकोनॉमिक्स ऑफ चाइल्ड लेबर नई दिल्ली दीप एण्ड दीप।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)